9

जनजातीय संगीत और नृत्य

जनजातीय संगीत और नृत्य की समृद्ध विरासत है। भारतीय शास्त्रीय कत्थक नृत्य से लेकर असम के लोक नृत्य बीहू तक संगीत व नृत्य के विभिन्न प्रकार हैं। पिछले कुछ वर्षों में जनजातीय संगीत और नृत्य ने लगभग प्रत्येक समारोहों में स्थान पाया है। विविध जनजातियों का अपना विशिष्ट संगीत और नृत्य शैली है जैसे केरल के जनजातियों का परवल्ली कली नृत्य। भारतीय जनजातीय नृत्य सरल है और अपने व्यक्तिगत आनंद तथा देवी और देवता के सम्मान में प्रदर्शित किये जाते हैं।

संगीत व नृत्य का प्रदर्शन संपूर्ण विश्व में किया जाता है। यह रंग, आनंद, खुशी और लय लाता है। यह विभिन्न अवसरों पर विविध भावों को व्यक्त करने का माध्यम है। जनजातीय नृत्यों के विशिष्ट परिधान, विशिष्ट ध्वनियां और गतियां हैं और अधिकतर समूह में प्रदर्शित किए जाते हैं। भारत एक विशाल देश है अतः यहां अलग-अलग राज्यों में भिन्न-भिन्न जनजातियां हैं। प्रत्येक जनजाति का संगीत व नृत्य प्रदर्शित करने का अपना विशिष्ट तरीका है। इसलिए इस पाठ में कुछ विधाओं का ही उल्लेख किया गया है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप:

- जनजातीय संगीत व नृत्य की व्याख्या कर सकेंगे;
- जनजातीय संगीत में प्रयोग किए गए संगीतमय सुरों की विवेचना कर सकेंगे;
- जनजातीय संगीत में प्रयोग किया जाने वाले वाद्ययंत्रों के प्रकारों की व्याख्या कर सकेंगे; और
- भारत के कुछ जनजातीय नृत्यों का उदाहरण सहित वर्णन कर सकेंगे।

9.1 जनजातीय संगीत

संगीत हवा में गूंजता है। इसे खुले स्थान में गाया जाता है। संगीत एक ध्वनि है जो सुने जाने पर आपको आनंद देती है और साथ ही अपना उद्देश्य भी बताती है। जनजातीय संगीत का एक उद्देश्य जंगली पशुओं से रक्षा है विशेषकर रात में। वे ढोल बजाकर एक विशेष प्रकार की आवाज निकालते हैं।

जनजातीय संगीत व नृत्य उनके दैनिक जीवन का हिस्सा है। यह उनकी संस्कृति सामाजिक मूल्यों को चित्रित करने के लिए प्रदर्शित किया जाता है। यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित किया जाता है। पुरुष, महिला, बच्चे, बूढे और जवान सभी इसमें शामिल होते हैं। संगीत व नृत्य उन्हें एकता के सूत्र में बांधता है। जनजातीय संगीतों का आयोजन मौसम, त्योहार या अन्य सामुदायिक अवसरों जैसे विवाह, शिशु का जन्म आदि अवसरों पर किया जाता है।

आषाढ़ माह (जून–जुलाई) में उड़ीसा में बिरहोर नृत्य का प्रदर्शन किया जाता है। मानसून ऋतु में श्रवण पुर्णिमा के अवसर पर डोमनाच का प्रदर्शन होता है। अक्टूबर–नवम्बर में पशुओं की सपन्नता दिखाने के लिए सोहराई व बांधना का प्रदर्शन होता है।

संगीतमय स्वर

जनजातीय संगीत के स्वरों का उद्गम पछियों और पशुआं की आवाजों से है। वे अक्सर कुछ असंगत स्वरों जैसे-हू, हा, याहा, पशुओं की घुरघुराने, पशुओं का चीखना, पछियों का चहचहाना, पछियों व पशुओं की पुकार व रोना, पेड़ों की आवाजों, जलप्रपात की आवाजों का प्रयोग करते हैं। धीरे–धीरे उन्होंने विभिन्न प्रकार के संगीत प्रकारों का नाम को किसी पंछी या पशु की आवाज के आध ार पर रखा, जैसे-मोर पर शद्जा ओर चेतक से ऋषभ।

जनजातीय संगीत में ऊंचे–नीचे स्वरों के साथ ऊंचा स्वर मान होता है। संगीतमय ध्वनियों एवं ध्वनिहीनता को ऐसे क्रम में रखा जाता है कि वह एक भय का रूप ले लेता है। यह आवाज, कठोर एवं मृदु हो सकती है। आज जनजातीय संगीत अपनी ताल व मौलिकता के कारण काफी प्रसिद्ध हो रहा है।

इन कुछ बातों के साथ संगीत के असंख्य रूप तैयार किए जाते हैं। कुछ संगीत प्रकार किसी कहानी या महागाथा को व्यक्त करने के लिए प्रयोग किए जाते हैं।

वाद्ययंत्रों के प्रकार

वाद्ययंत्र संगीतकारों द्वारा स्वयं ही तैयार किए जाते हैं। इसके लिए कच्चा माल आस–पास से ही मिलता है। लकडी का टुकडा, छड़ी, बांस, जानवरों की चमड़ी, सूखी हुई सब्जी जैसे–लौकी और कद्दू, दाने आदि का प्रयोग विभिन्न उपकरणों

चित्र 9.1 ढोल

को बनाने के लिए किया जाता है। इसमें से कुछ प्रसिद्ध वाद्ययंत्र हैं-ढोल, टुनटुना, चरचरी, हिमकी, सारंगी, खरताल, जलतरंग आदि। मध्य प्रदेश में फसलों की कटाई के समय बैल की सींग से बनी तुरही का प्रयोग किया जाता है। मंदी, कोरालोका, कुडीट आदि अन्य प्रकार के ढोल हैं।

9.2 विभिन्न प्रकार के जनजातीय नृत्य

जनजातीय नृत्य का प्रदर्शन सामान्यतः समूह में होता है और इस अवसर पर विशेष परिधान पहने जाते हैं। सामान्य रूप से संगीत व नृत्य द्वारा एक कहानी कही जाती है। ये लोग किसी प्रसिद्ध फिल्मी गाने पर नृत्य नहीं करते। प्रत्येक जनजाति का अपना विशेष नृत्य, विशिष्ट परिधान, संगीत और वाद्ययंत्र होता है।

भारत के अलग-अलग क्षेत्रों में कई प्रसिद्ध नृत्य प्रचलित हैं। उसमें से कुछ हैं-गद्आ, कोंध, कोया, सओरा, कादर नृथम्, कुरुम्बर नृथम्, घूमर आदि। घूमर राजस्थान की भील जनजाति का नृत्य है जबकि गवरी एक नृत्य नाटिका के रूप में राजस्थान के चित्तौड क्षेत्र में प्रचलित हैं। नृत्य के कुछ प्रकार निम्नलिखित हैं-

परवल्ली कली : यह केरल का एक प्रसिद्ध जनजातीय नृत्य है। यह नृत्य यहां के त्रावनकोर क्षेत्र के घने जंगलों में रहने वाले मूल निवासियों द्वारा किया जाता है। इस नृत्य में महिलाएं व पुरुष दोनों शामिल होते हैं। कई लोगों के समूह में हो रहे नृत्य में कई मनमोहक प्रतिरूप बनते हैं और जिनमें बडी तेजी के साथ परिवर्तन भी होता है। इस नृत्य को देखना आश्चर्य चकित करने वाला होता है।

गोंड नृत्य : गोंड जनजाति के लोग मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और उड़ीसा के कुछ क्षेत्रों में रहते हैं। यह नृत्य पूरी वर्ष विशेषकर विवाह के अवसर पर किया जाता है। इनके परिधान में बहुत ही रंग बिरंगा अचकन और सीपियों और शीशे से सजाई हुई पगडी होती है। महिलाएं चांदी के आभूषण पहनती है। सामान्यत: 20-30 युवा पुरुष और महिलाएं इसमें भाग लेते हैं। लकडी के ढोल और वाद्ययंत्र अक्सर पुरुषों द्वारा बजाए जाते हैं। इसके नृत्य चरणों में मुख्यत: पैरों का धीरे-धीरे आगे बढ़ना और झुकना होता है।

बीजू नृत्य : बीजू नृत्य त्रिपुरा की चकमा जनजाति का नृत्य है। बीजू का अर्थ है-चेत्र संक्रान्ति अथवा बंगाली कैलेंडर वर्ष की समाप्ति। इसका प्रदर्शन नए वर्ष के स्वागत के लिए किया जाता है। यह ढोल, बाझी (बांसुरी), हैमरांग (बांस से बना एक वाद्ययंत्र) और धुधुक (हेगरांग जैसा वाद्ययंत्र) जैसे वाद्ययंत्रों पर किया जाने वाला एक लयात्मक नृत्य है।

पाठगत प्रश्न 9.1

I. रिक्त स्थान भरिए:

1. जनजातीय संगीत का प्रयोग .... से सुरक्षा के लिए किया जाता था।

2. मोर की संगीतमय ध्वनि .... के नाम से जानी जाती है।

3. उड़ीसा की सींग से बनी तुरही .... के नाम से जानी जाती है।

4. .... शादियों के अवसर पर मध्य प्रदेश में किया जाने वाला नृत्य है।

5. त्रावणकोर क्षेत्र में .... नृत्य किया जाता है।

6. त्रिपुरा में किए जाने वाले नृत्य का नाम .... है।

7. संगीत व ध्वनि में अंतर ही .... है।

8. श्रवण पूर्णिमा के अवसर पर उड़ीसा में .... नृत्य होता है।

आपने क्या सीखा

संगीत व नृत्य जनजातीय लोगों के जीवन का अभिन्न अंग है। कभी-कभी इसका प्रयोग जनजातीय लोगों की वन पशुओं से सुरक्षा के लिए प्रयोग किया जाता था। सभी पुरुष, महिलाएं, बच्चे और बूढे इसमें शामिल होते हैं। यह मौसम, त्योहारों और विभिन्न सामुदायिक त्योहारों से जुडा है।

संगीतमय स्वर पछियों, पशुओं, पेड़ों की आवाजों, पानी के बहाव, हवा में विभिन्न वाद्य यंत्रों की आवाजों से मिलते हैं। ढोल व सारंगी जैसे वाद्ययंत्र प्रसिद्ध हैं। वाद्ययंत्र का निर्माण स्थानीय रूप से संगीतकारों द्वारा ही होता है। कुछ सामान्यत: प्रयोग किए जाने वाले वाद्ययंत्र हैं-ढोल, टुनटुना, चरचरी, टिमकी, सारंगी, करताल, जलतरंग, बांसुरी, मंडरी, कोटोलेका, कुंडी आदि। लकडी का

टुकडा, छड़ी, बांस, जानवरों का चमड़ा, केला, कद्दू जैसी सूखी सब्जियां, सींग जैसी वस्तुओं का निर्माण वाद्ययंत्रों के निर्माण में कच्चे माल के रूप में होता है।

जनजातीय नृत्य विशेष हैं ओह समूह नृत्य, लयपूर्ण मुद्राओं में परिवर्तन, परिधानों, संगीत व वाद्ययंत्रों के कारण एक मजबूत प्रभाव छोडते हैं। भारत के विविध क्षेत्रों में रहने वाली जनजातियों के विविध नृत्य हैं। इसमें से कुछ प्रमुख नृत्य हैं–गद्भा, कोंध, कोया, कादर नृथम्, कुरुम्बर नृथम्, घूमर आदि।

पाठांत प्रश्न

1. जनजातीय संगीत हमारे दैनिक जीवन से कैसे जुड़ा है?

2. जनजातीय संगीत के स्वरों की कोई चार विशेषताएं लिखिए।

3. किन्हीं 10 संगीतमय वाद्ययंत्रों के नाम लिखिए।

4. किन्हीं दो जनजातीय नृत्यों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तरमाला

9.1

I. 1. जंगली पशुओं के आक्रमण

2. शजदा

3. हाकुम

4. गोंड नृत्य

5. परवल्ली कली

6. बीजू

7. स्वर

8. डूमनाच (दंड नाच)